विद्या- भवन, बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

नीतू कुमारी, वर्ग-चतुर्थ विषय-हिंदी

पाठ -12 प्रतिज्ञा

दिनांक-15-09-2021 एन.सी.ईआर.टी पर आधारित

सुप्रभात,

दिए ,गए कहानी पूरे मनोयोग से पढ़ें तथा समझने का प्रयास करें।

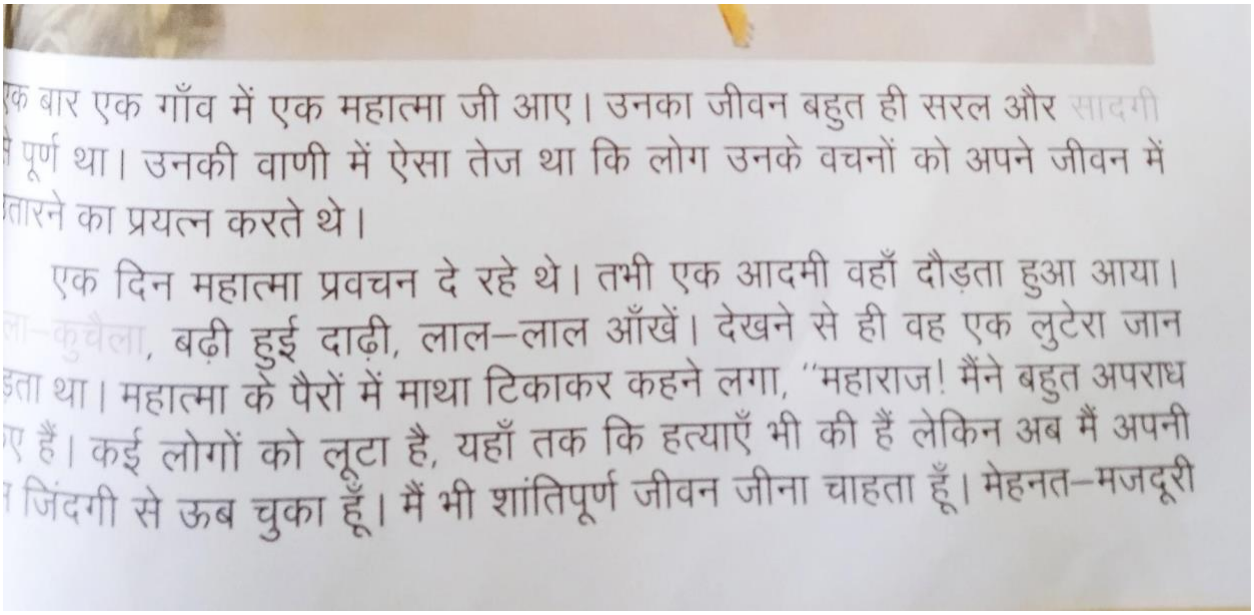

एक बार एक गाँव में एक महात्मा जी आए। उनका जीवन बहुत ही सरल और सादगी से पूर्ण था। उनकी वाणी में ऐसा तेज था कि लोग उनके वचनों को अपने जीवन में उतारने का प्रयत्न करते थे।

एक दिन महात्मा प्रवचन दे रहे थे। तभी एक आदमी वहाँ दौड़ता हुआ आया। काला-कुचैला, बढ़ी हुई दाढ़ी, लाल–लाल आँखें। देखने से ही वह एक लुटेरा जान पड़ता था। महात्मा के पैरों में माथा टिकाकर कहने लगा, "महाराज! मैंने बहुत अपराध किए हैं। कई लोगों को लूटा है, यहाँ तक कि हत्याएँ भी की हैं लेकिन अब मैं अपनी इस जिंदगी से ऊब चुका हूँ। मैं भी शांतिपूर्ण जीवन जीना चाहता हूँ। मेहनत–मजदूरी

करके ईमानदारी के साथ जीवन व्यतीत करना चाहता हूँ। अपने परिवारवालों के साथ रहना चाहता हूँ। महाराज! मैं अपने जीवन में बदलाव लाना चाहता हूँ। क्या कोई उपाय है?''

महात्मा ने ध्यान से उसकी तरफ देखा, फिर शांत और गंभीर वाणी में बोले, ''बेटा! तुम तो बहुत भले इंसान हो। तुम्हारे अंदर यह अवगुण कहाँ से आ गया? तुम लोगों को क्यों लूटते हो?''

महात्मा के स्नेहपूर्ण वचन को सुनकर, उस व्यक्ति की आँखों से झर–झर आँसू बहने लगे। वह कुछ बोल न सका।

महात्मा फिर बोले, ''बेटा! तुम प्रतिज्ञा करो कि आज से तुम लूटपाट नहीं करोगे, न किसी को सताओगे, न झूठ बोलोगे। ऐसा करने से तुम्हारा जीवन बदल जाएगा। बोलो, क्या तुम यह प्रतिज्ञा कर सकते हो?'' उस व्यक्ति ने कहा, ''महाराज! मैं प्रतिज्ञा करता हूँ। आज से मैं लोगों को लूटना छोड़ दूँगा।''

इस घटना के कुछ दिन बीत गए। एक बार फिर वहीं महात्मा कहीं पर प्रवचन कर रहे थे। उस समय वहीं लुटेरा पुनः वहाँ आया। महात्मा के चरण छूए और हाथ जोड़कर बोला, ''महाराज! मैंने लूटपाट न करने की प्रतिज्ञा की थी, लेकिन मैं उस प्रतिज्ञा को निभा नहीं पा रहा हूँ। लोगों को, लूटना मेरी आदत–सी बन गई है। मैंने बहुत कोशिश की लेकिन मेरी यह आदत नहीं जा रही है। क्या करूँ? कृपा करके आप मुझे कोई दूसरा उपाय बताइए जिससे मैं अपने में सुधार ला सकूँ।

महात्मा थोड़ी देर तक कुछ सोचते रहे, फिर बोले, ''ठीक है! मैं तुम्हें दूसरा उपाय बताता हूँ लेकिन इस बार तुम्हें मेरे वचनों का पालन करना होगा। यह तुम्हारे लिए कोई मुश्किल काम भी नहीं है।''

''महाराज ! मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि इस बार मैं आपकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करूँगा।'' लुटेरे ने कहा। महात्मा बोले, ''तुम जितना चाहो लूटपात कर सकते हो, उनके साथ जैसा चाहो वैसा व्यवहार कर सकते हो लेकिन शर्त यह है कि हर दिन शाम को तुम्हें मेरे पास आना होगा और सबके सामने अपनी गलती को स्वीकार करना होगा। तुम्हें सच–सच यह बताना होगा कि दिनभर में तुमने कौन–कौन से गलत काम किए हैं। बोला, क्या तुम यह काम कर सकते हो?''